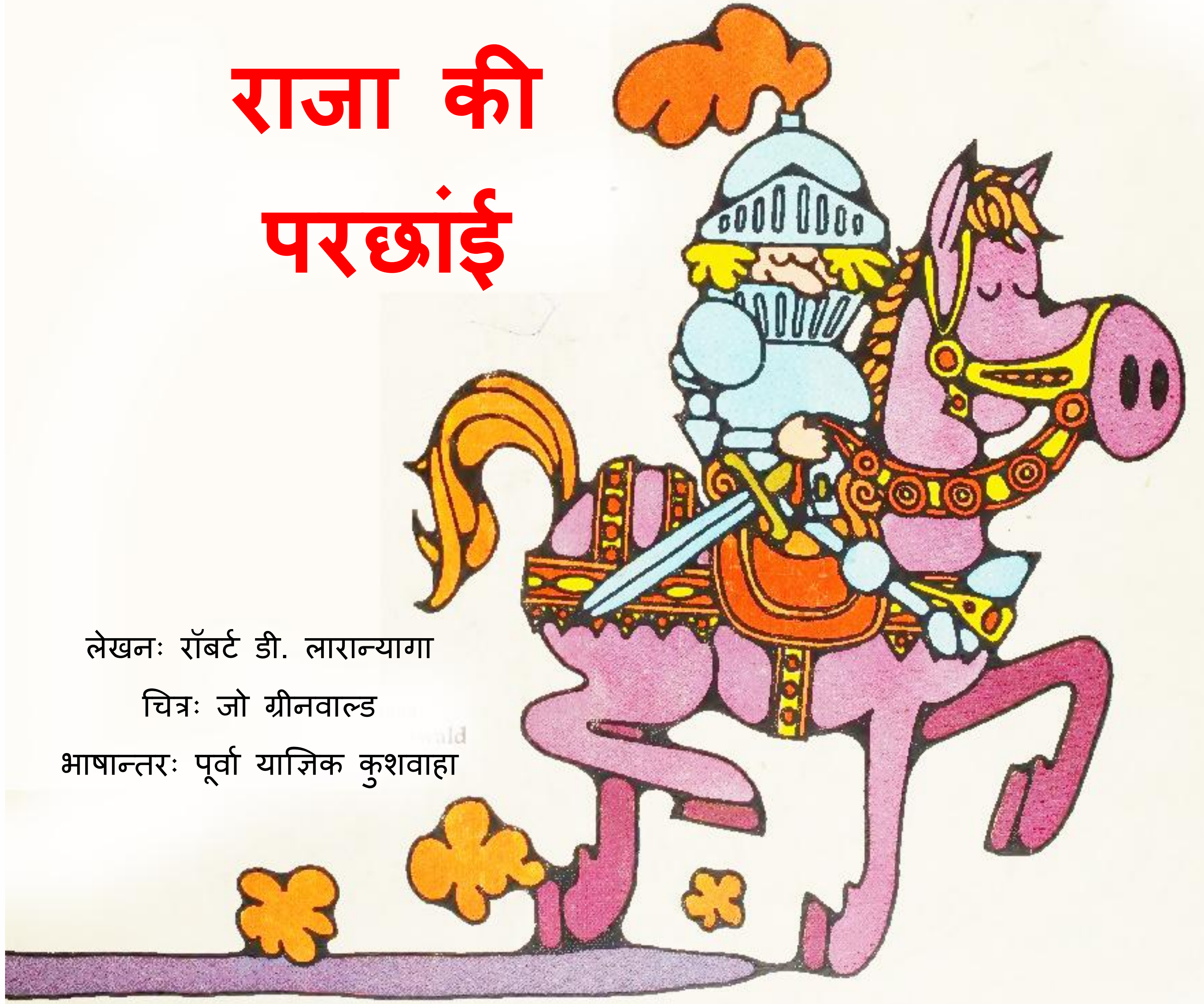
# राजा की परछांई



लेखनः रॉबर्ट डी. लारान्यागा

चित्रः जो ग्रीनवाल्ड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

# राजा की परछांई



लेखन: रॉबर्ट डी. लारान्यागा
चित्र: जो ग्रीनवाल्ड
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





एक समय एक राजा था जो अपनी परछांई से डरता था। कभी-कभी तो वह उल्टा चलता था ताकि वह अपनी परछांई पर नज़र रख सके।

जब राजा महल के जुलूसों उलटा चलता तो यह बड़ा ही अजीब लगता था।

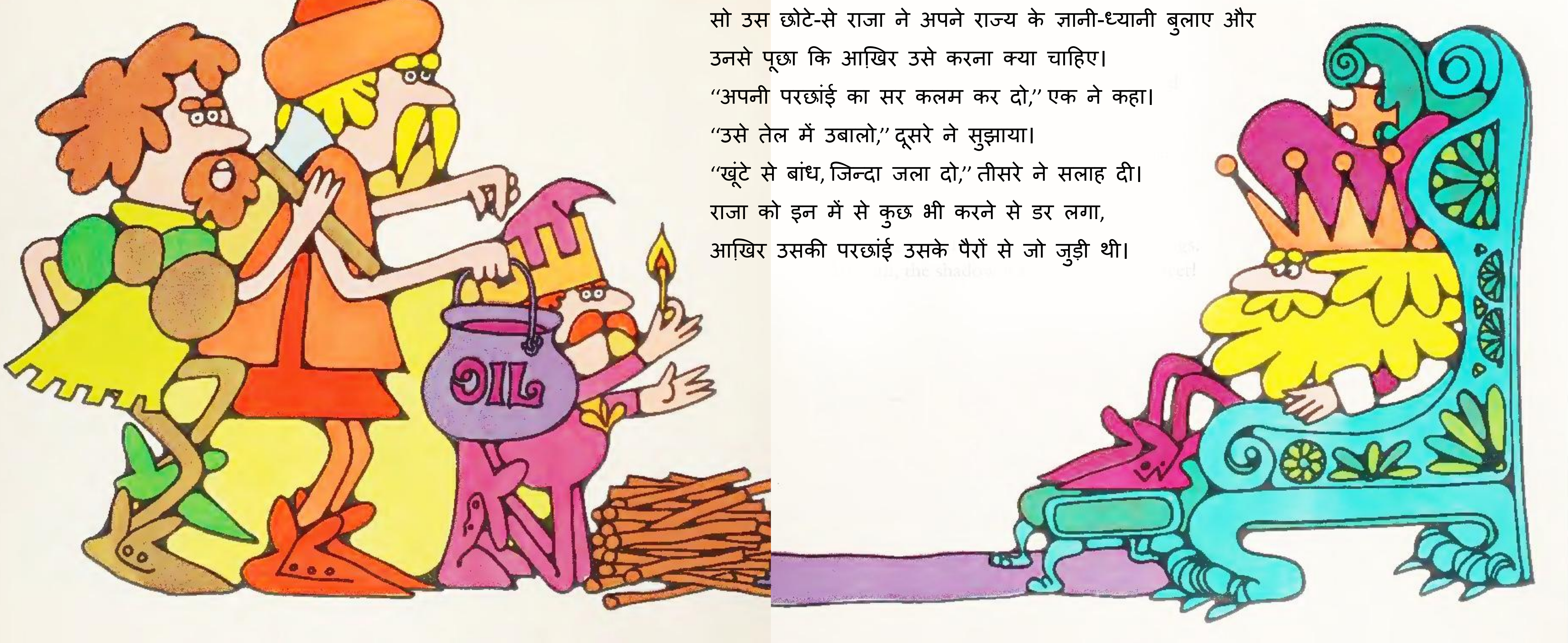
सो उस छोटे-से राजा ने अपने राज्य के ज्ञानी-ध्यानी बुलाए और
उनसे पूछा कि आख़िर उसे करना क्या चाहिए।

“अपनी परछांई का सर कलम कर दो,” एक ने कहा।

“उसे तेल में उबालो,” दूसरे ने सुझाया।

“खूंटे से बांध, जिन्दा जला दो,” तीसरे ने सलाह दी।

राजा को इन में से कुछ भी करने से डर लगा,
आख़िर उसकी परछांई उसके पैरों से जो जुड़ी थी।

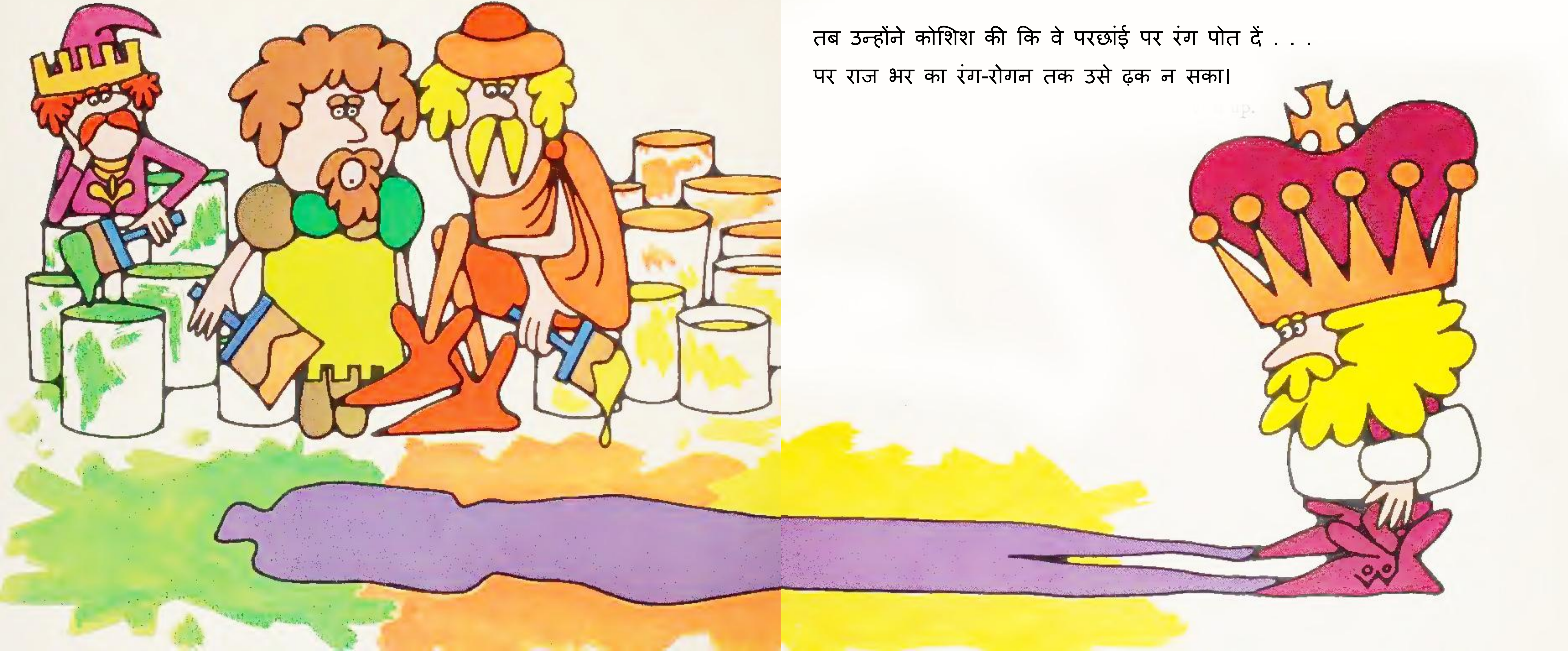





"तो फिर अपने जूते उतार दो," उन्होंने कहा।
पर जब राजा अपने जूते उतार आगे बढ़ा,
लेकिन परछांई उसके पीछे बनी रही।



तब उन्होंने कोशिश की कि वे परछांई पर रंग पोत दें . . .
पर राज भर का रंग-रोगन तक उसे ढ़क न सका।

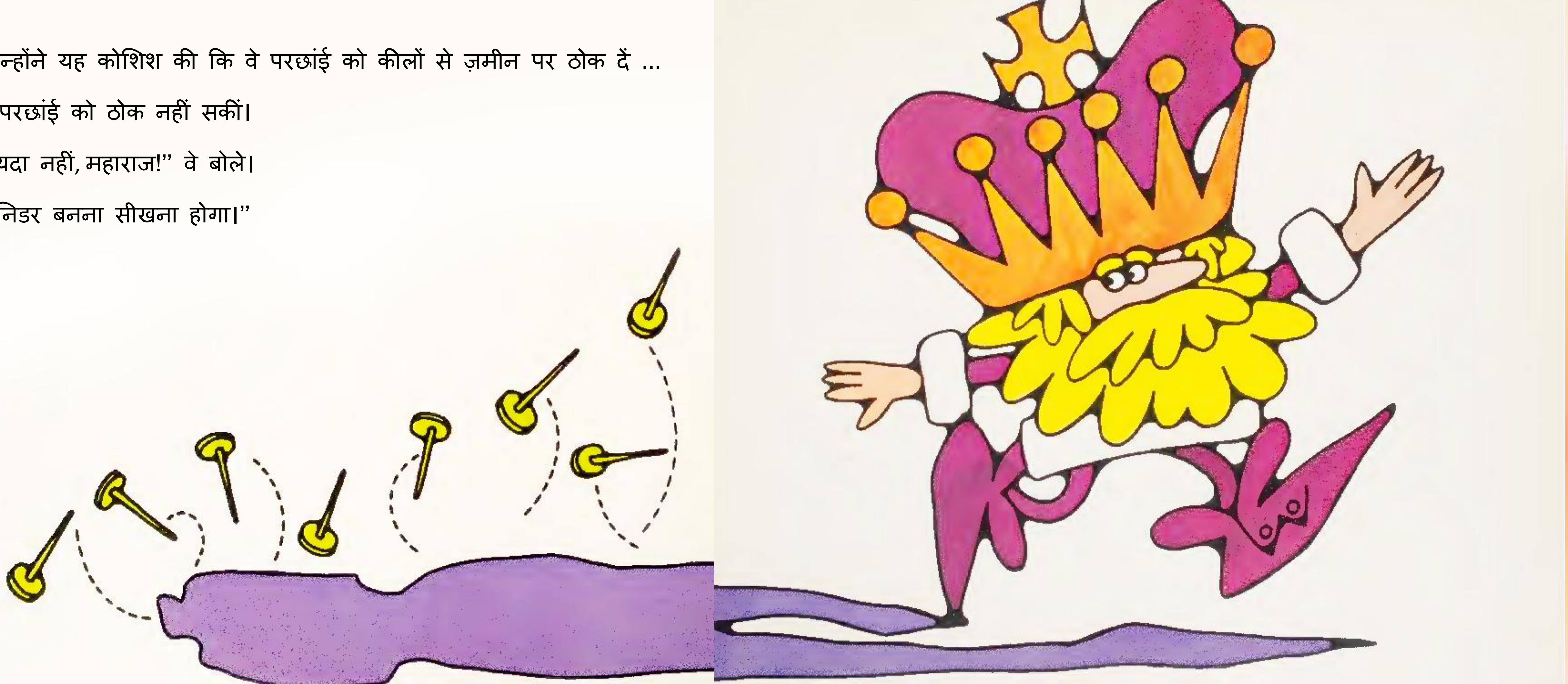


इस पर उन्होंने यह कोशिश की कि वे परछांई को कीलों से ज़मीन पर ठोक दें ...

पर कीलें परछांई को ठोक नहीं सकीं।

“कोई फ़ायदा नहीं, महाराज!” वे बोले।

“आपको निडर बनना सीखना होगा।”



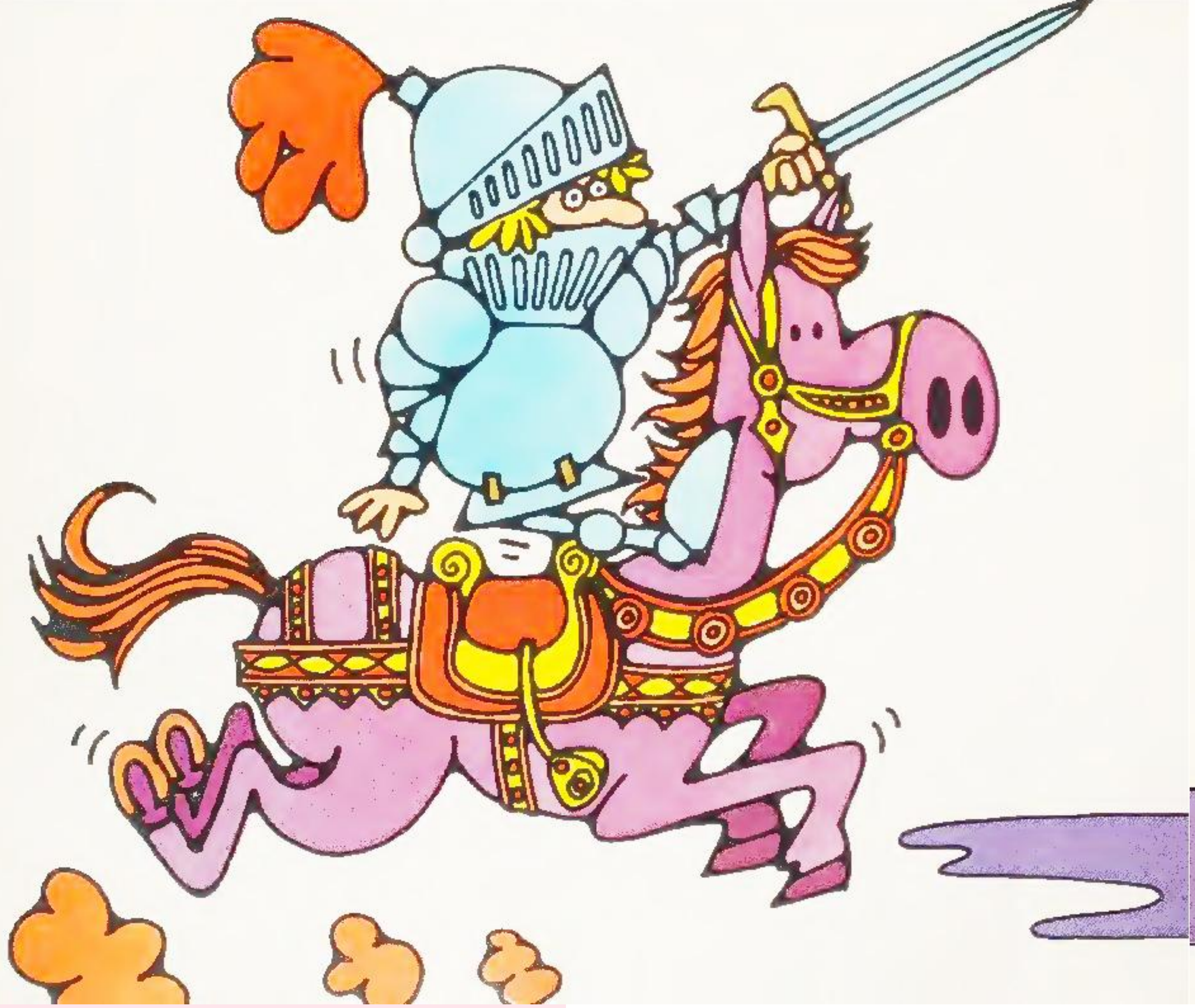
पर राजा ने सलाह पर अमल करने के बदले खुद को महल की मीनार में बने एक अंधेरे कमरे में बन्द कर लिया। यहाँ वह अपनी परछांई से छिप सकता था।

एक दिन एक हरकारे ने राजा का दरवाज़ा खटखटाया।

"महाराज!" वह चीखा। "आपके राज में एक अग्नि ड्रैगन खुले आम घूम रहा है। वह कहता है कि जब तक आप उससे नहीं लड़ते, वह राज छोड़ कहीं और जाएगा ही नहीं।"

"पर म-म-म-म-मैं तो ड्रैगन से भी ज़्यादा अपनी परछांई से डरता हूँ," राजा ने कांपते हुए कहा।

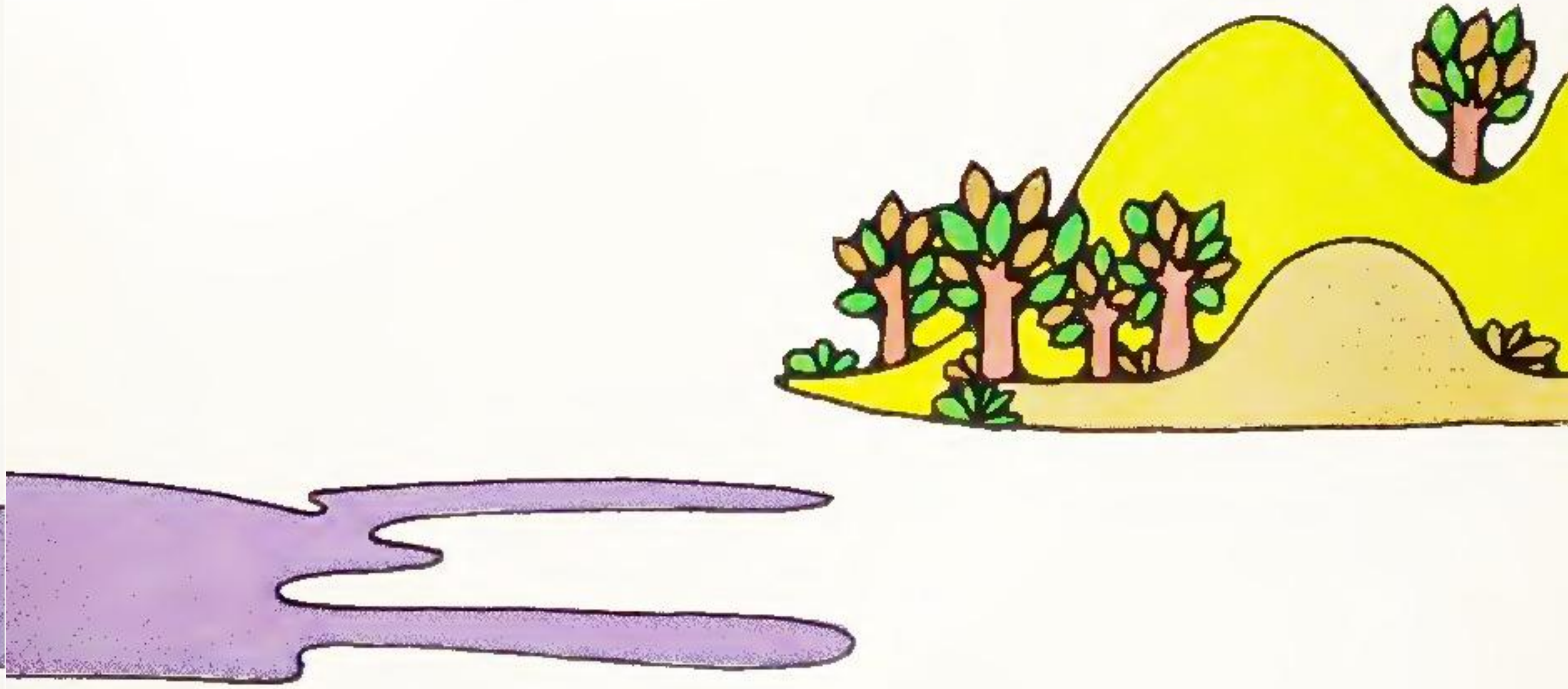




पर कोई चारा था ही नहीं - ड्रैगन तो लड़ने पर आमादा था।

सो सेवकों ने कांपते-थर्राते राजा को चमकीला कवच पहनाया,

उसे घोड़े पर बैठाया और ड्रैगन से लड़ने भेज दिया।



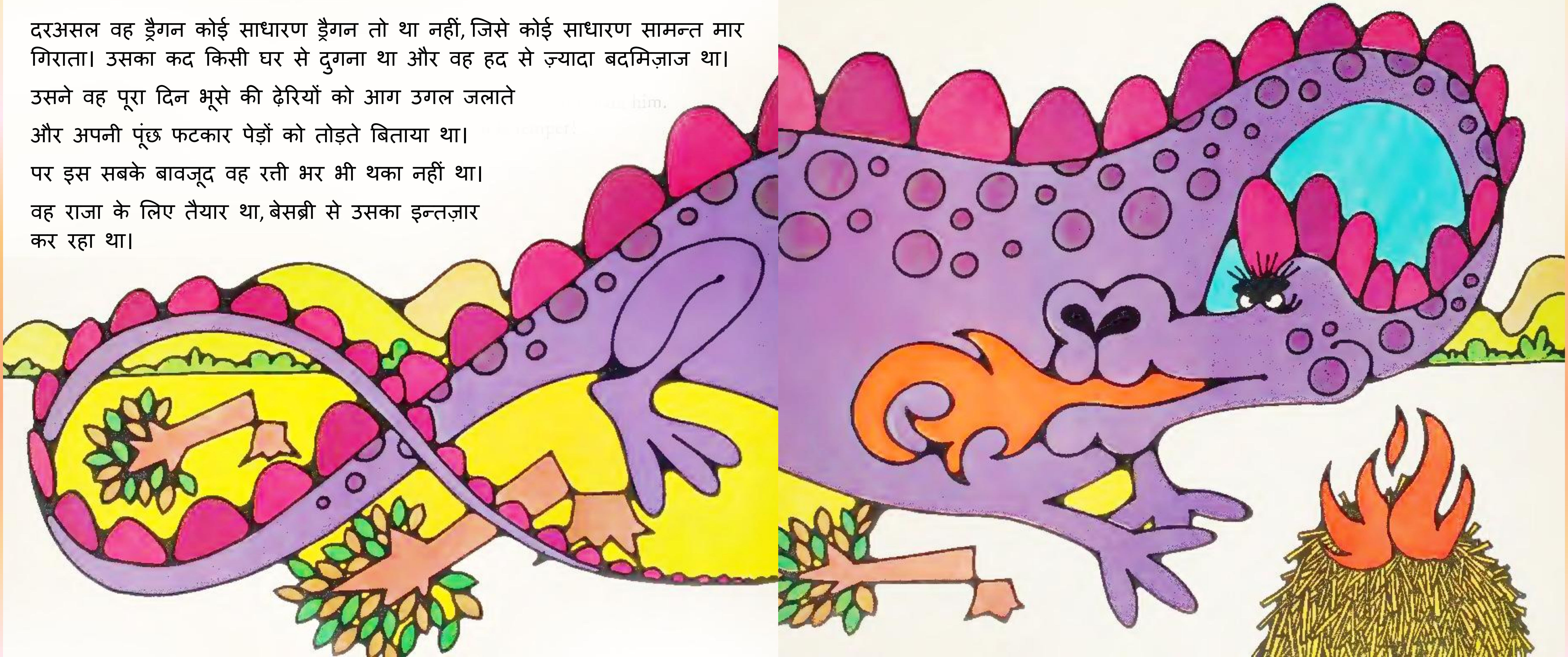
दरअसल वह ड्रैगन कोई साधारण ड्रैगन तो था नहीं, जिसे कोई साधारण सामन्त मार गिराता। उसका कद किसी घर से दुगना था और वह हद से ज़्यादा बदमिज़ाज था।

उसने वह पूरा दिन भूसे की ढेरियों को आग उगल जलाते

और अपनी पूंछ फटकार पेड़ों को तोड़ते बिताया था।

पर इस सबके बावजूद वह रती भर भी थका नहीं था।

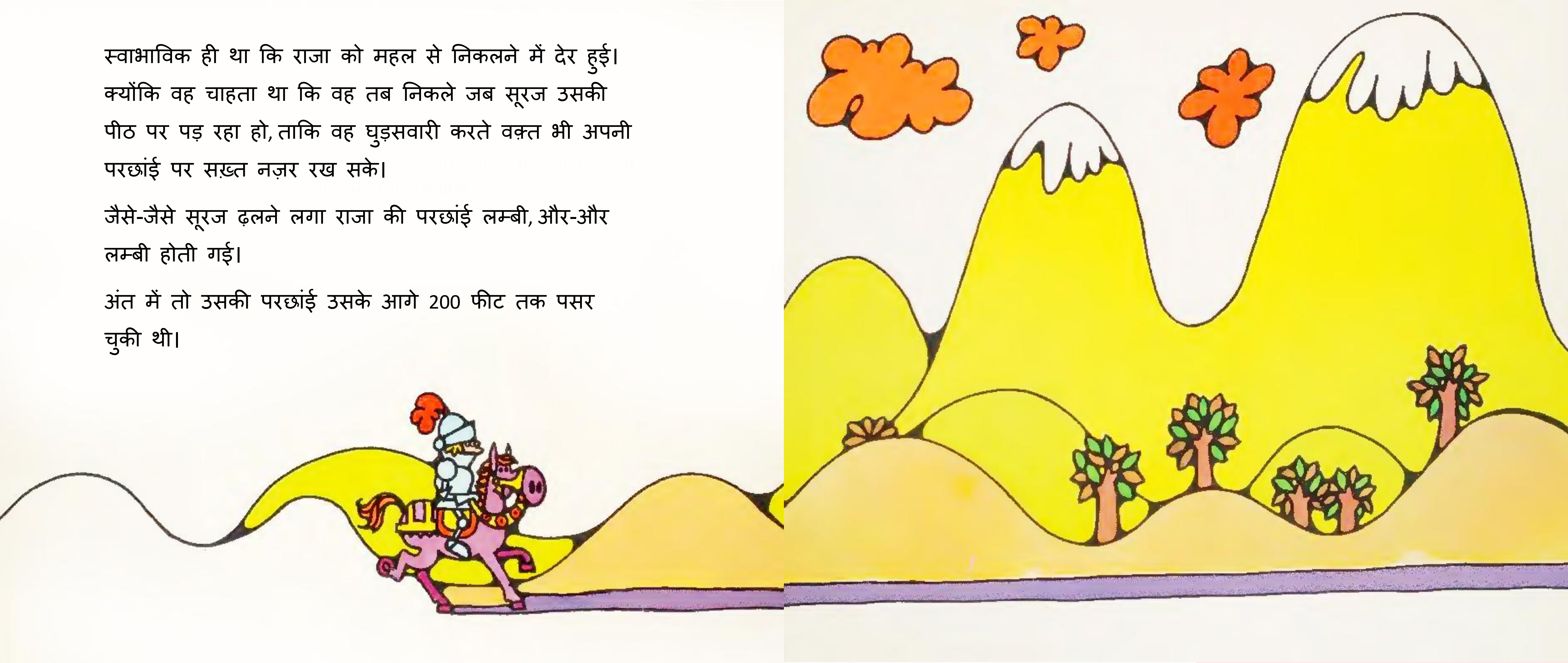
वह राजा के लिए तैयार था, बेसब्री से उसका इन्तज़ार कर रहा था।



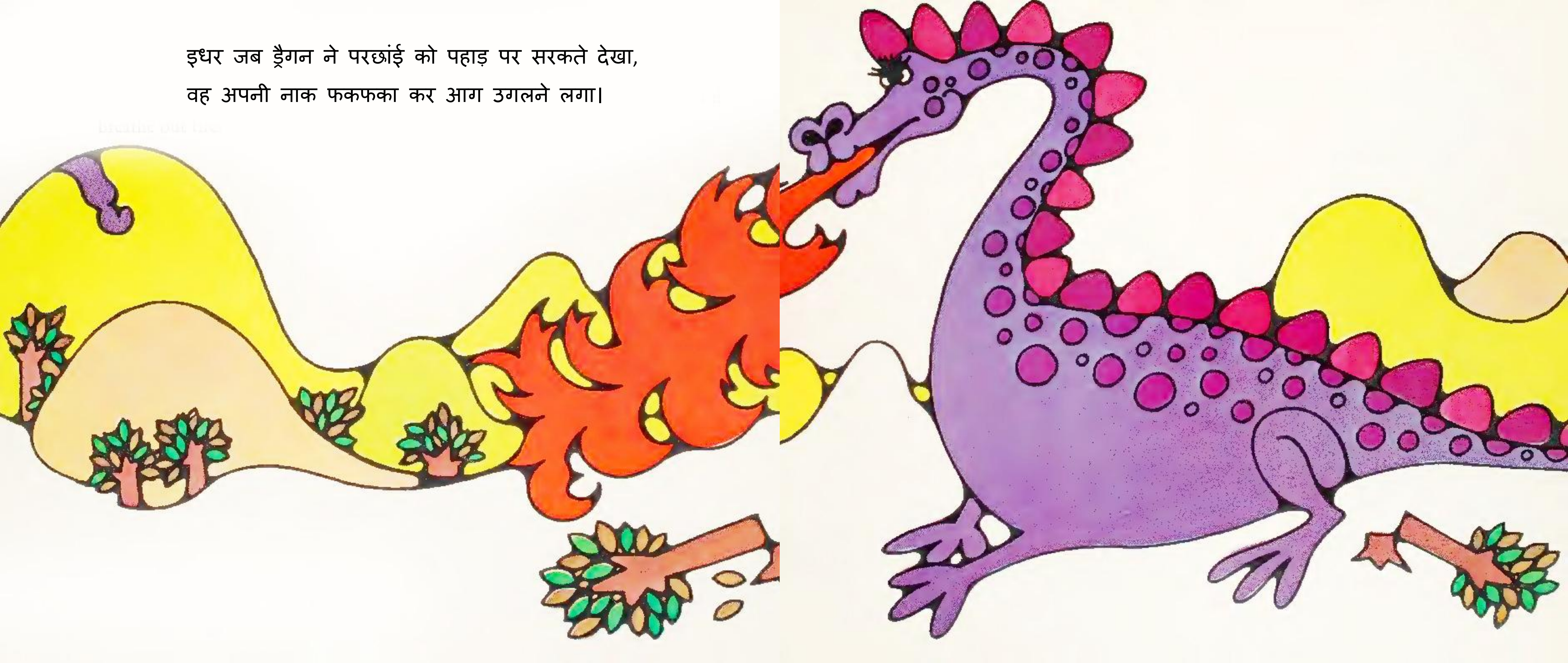
स्वाभाविक ही था कि राजा को महल से निकलने में देर हुई। क्योंकि वह चाहता था कि वह तब निकले जब सूरज उसकी पीठ पर पड़ रहा हो, ताकि वह घुड़सवारी करते वक़्त भी अपनी परछांई पर सख़्त नज़र रख सके।

जैसे-जैसे सूरज ढ़लने लगा राजा की परछांई लम्बी, और-और लम्बी होती गई।

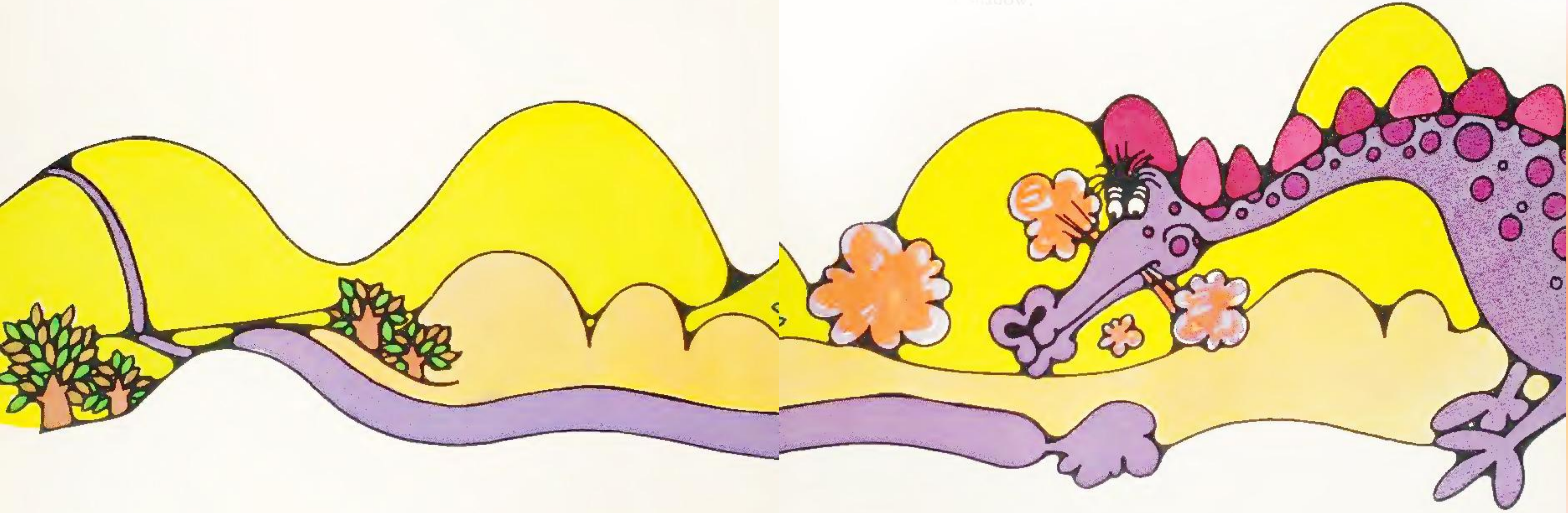
अंत में तो उसकी परछांई उसके आगे 200 फीट तक पसर चुकी थी।



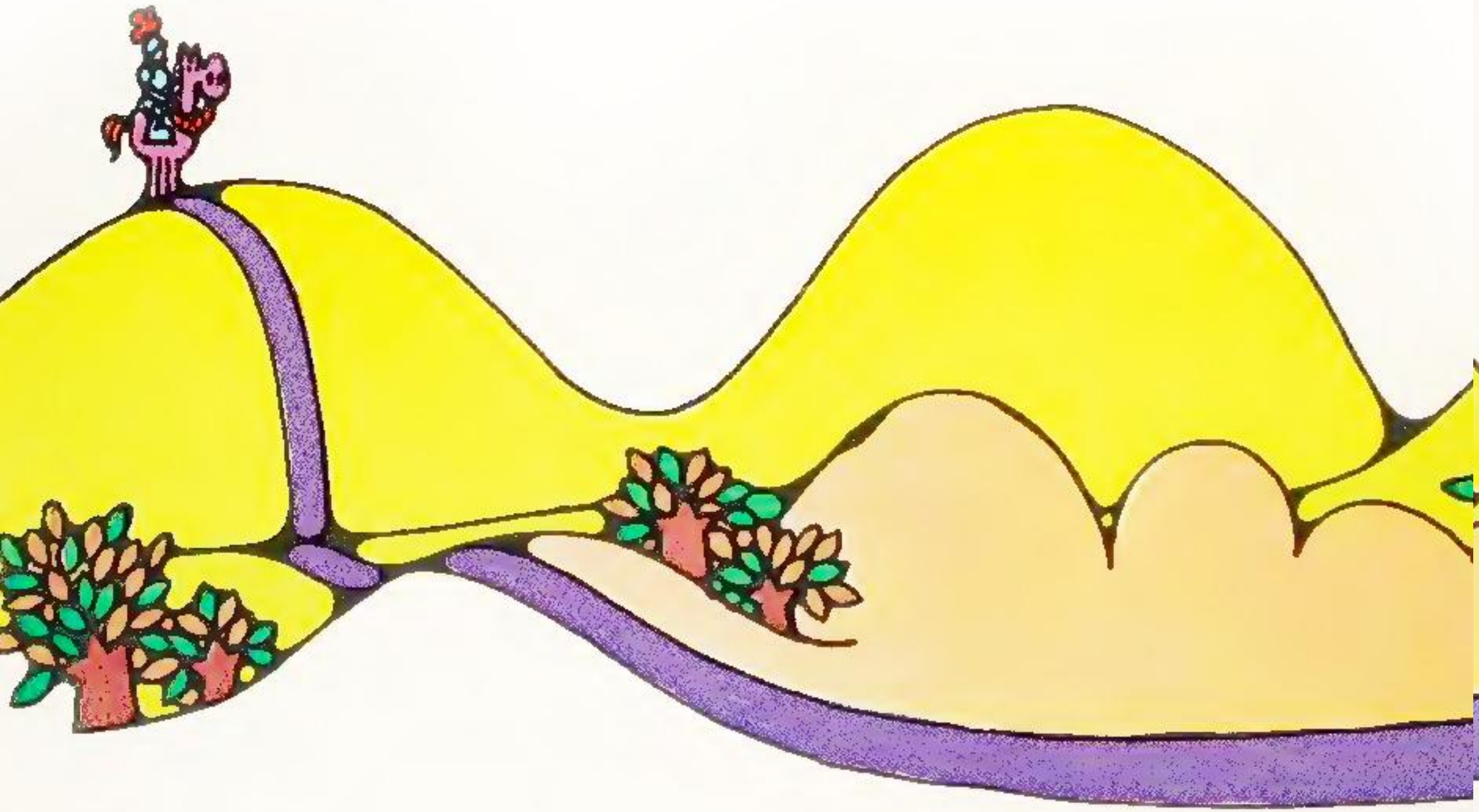
इधर जब ड्रैगन ने परछाई को पहाड़ पर सरकते देखा,
वह अपनी नाक फकफका कर आग उगलने लगा।



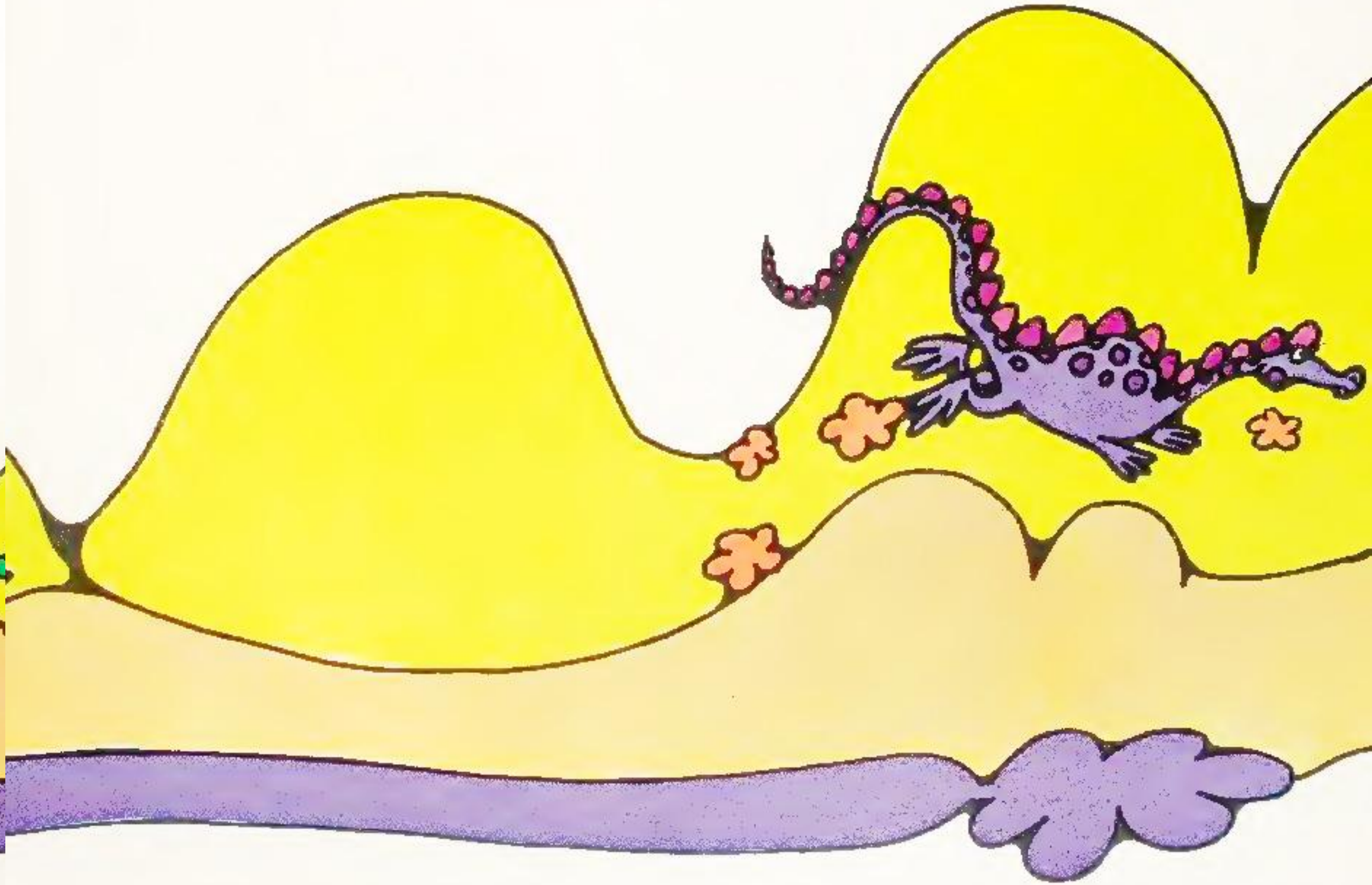
पर जब उसने परछांई के आकार को ग़ौर से देखा तो उसकी नाक की फकफकाहट थरथराहट में और उसकी आग धुंए में बदलने लगी।



उसने सोचा कि उन्होंने किसी लहीम-शहीम इन्सान को उसे मारने भेजा है। ड्रैगन पलटा और भाग खड़ा हुआ।



“लो यह भला क्या हुआ?” राजा बोला। “वह तो मुझे देखते ही भाग निकला।”





राजा वापस मुड़ा, और यह देखे बिना ही कि उसकी
परछांई कहाँ है, महल की ओर चल दिया।
आख़िर वह परछांई की फ़िक्र भला क्यों करता,
जब वह आग उगलने वाले ड्रैगन को
अभी-अभी भगा चुका था।





**लेखक**

रॉबर्ट डी. लाराऩ्यागा कॉलेजविले, मिनेसोटा स्थित सेंट जॉन विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। उन्होंने खेल-कूद से लेकर बाज़ार विश्लेषण तक के विषयों पर लिखा है। वे वर्तमान में मिनियापोलिस की एक अग्रणी विज्ञापन कम्पनी के प्रचार व विज्ञापन लेखक के रूप में काम कर रहे हैं। लाराऩ्यागा ने *द किंग्स शैडो* के अलावा किशोर पाठकों के लिए कई ऐतिहासिक पुस्तकें व विज्ञापन पर भी एक पुस्तक रची है। फिलहाल वे बच्चों के लिए एक और कथा पर काम कर रहे हैं। वे अपनी पत्नी व तीन बच्चों के साथ ब्लूमिंगटन, मिनेसोटा में रहते हैं।

**चित्रकार**

जो ग्रीनवाल्ड सेंट पॉल, मिनेसोटा के स्कूल ऑफ एसोसिएटेड आर्टस् के स्नातक हैं। 1962 से उन्होंने पाँच वर्षों तक लेआउट व डिज़ाइन तथा पुस्तकों को चित्रित करते बिताए। अपनी कलात्मक प्रतिभा व प्रबंधन क्षमता का उपयोग वे वर्तमान में एक प्रमुख राष्ट्रीय विज्ञापन एजेंसी के निदेशक के रूप में कर रहे हैं। वे मिनियापोलिस में रहते हैं।